EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter)
Patron: Prof. R. G. Kothari
Chief Editor: Prof. Jignesh B. Patel
Email:- Mo. 9429429550 ctefeduinspire@gmail.com

"शिक्षक शिक्षा में रंगमंच एवं ललित कला के अनुयोग द्वारा भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विकास: एक अध्ययन"

संशोधक
कु. आयुषी अशोक कार्लेकर
शासकीय अध्यापक महाविद्यालय, यवतमाळ

सारांश

वर्तमान समय में शिक्षक शिक्षा का उद्देश्य केवल विषयगत ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि ऐसे शिक्षकों का निर्माण करना भी है जो भावनात्मक रूप से परिपक्व, संवेदनशील तथा प्रभावी संप्रेषण हो। भावनात्मक बुद्धिमत्ता शिक्षक को अपनी तथा विद्यार्थियों की भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने और सकारात्मक शिक्षण वातावरण निर्मित करने में सक्षम बनाती है। वहीं कला शिक्षा रचनात्मकता, संवेदनशीलता, अभिव्यक्ति तथा सौंदर्यबोध का विकास करती है। यदि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कला शिक्षा के माध्यम से भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विकास किया जाए, तो शिक्षण अधिक प्रभावी, समावेशी एवं छात्र-केंद्रित बन सकता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता शिक्षक की व्यावसायिक सफलता, कक्षा प्रबंधन, विद्यार्थियों के साथ सकारात्मक संबंध तथा समावेशी शिक्षण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। रंगमंच एवं ललित कला जैसी रचनात्मक विधाएँ शिक्षक-प्रशिक्षुओं में आत्म-जागरूकता, सहानुभूति, संप्रेषण कौशल, सहयोग, रचनात्मकता तथा भावनात्मक संतुलन विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य शिक्षक शिक्षा में रंगमंच एवं ललित कला के अनुप्रयोग द्वारा भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विकास की संभावनाओं का विश्लेषण करना है। अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है तथा द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कला-आधारित शिक्षण गतिविधियाँ शिक्षक-प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व विकास एवं भावनात्मक दक्षताओं को सुदृढ़ बनाने में प्रभावी सिद्ध होती हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में शिक्षक शिक्षा में भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं कला शिक्षा के महत्व, आवश्यकता, अनुप्रयोग तथा चुनौतियों का अध्ययन किया।

मुख्य शब्द : शिक्षक-शिक्षा, रंगमंच, ललित कला, भावनात्मक बुध्दिमत्ता, शिक्षक- प्रशिक्षु।

प्रस्तावना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) ने शिक्षा में कला-एकीकृत शिक्षण तथा समाजिक-भावनात्मक अधिगम पर विशेष बल दिया है। शिक्षक केवल विषय-वस्तु का ज्ञान देने वाला नहीं, बल्कि विद्यार्थियों का मार्गदर्शक, प्रेरक एवं संवेदनशील व्यक्तित्व होता है। इसके लिए शिक्षक में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का होना आवश्यक है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अर्थ है-अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को समझना, उनका उचित प्रबंधन करना तथा सकारात्मक संबंध स्थापित करना। रंगमंच और ललित कला ऐसी सशक्त विधाएँ हैं जो शिक्षकों में भावनात्मक परिपक्वता, रचनात्मकता तथा सामाजिक संवेदनशीलता का विकास करती हैं। भावनात्मक बुद्धिमत्ता का आशय व्यक्ति की अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को पहचानने, समझने, नियंत्रित करने एवं सकारात्मक रूप से अभिव्यक्त करने की क्षमता से है। कला शिक्षा जैसे चित्रकला, संगीत, नाटक, नृत्य एवं हस्तकला के माध्यम से शिक्षक अपने भावों की रचनात्मक अभिव्यक्ति करना सीखता है, जिससे उसका व्यक्तित्व अधिक संतुलित एवं प्रभावशाली बनता है। शिक्षक इस संपूर्ण प्रक्रिया के केंद्र में होता है। यदि शिक्षक स्वयं भावनात्मक रूप से सक्षम होगा, तभी वह विद्यार्थियों के साथ स्वस्थ, प्रेरणादायी एवं सहयोगात्मक वातावरण निर्मित कर सकेगा।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

प्रस्तुत शोध-पत्र में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की अवधारणा, विकास, प्रमुख सिद्धांतों, घटकों, विकास को प्रभावित करने वाले कारकों तथा इसके व्यावहारिक महत्व का अध्ययन किया गया है। साथ ही शिक्षा, नेतृत्व, मानसिक स्वास्थ्य एवं सामाजिक जीवन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता जन्मजात होने के साथ-साथ अभ्यास, शिक्षा, प्रशिक्षण तथा जीवनानुभवों के माध्यम से विकसित की जा सकती है। इसलिए विद्यालयों, महाविद्यालयों, परिवारों तथा कार्यस्थलों पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विकास हेतु योजनाबद्ध प्रयास आवश्यक हैं।

उद्दिष्टे :

शिक्षक शिक्षा में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के महत्व का अध्ययन करना।

रंगमंच एवं ललित कला की शैक्षिक उपयोगिता का विश्लेषण करना।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विकास में कला-आधारित गतिविधियों की भूमिका का अध्ययन करना।

शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में कला-आधारित शिक्षण के प्रभावी सुझाव प्रस्तुत करना।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विभिन्न आयामों (आत्म-जागरूकता, सहानुभूति, आत्म-नियंत्रण, सामाजिक कौशल आदि) पर इन कलाओं के प्रभाव का विश्लेषण करना।

अध्ययन का महत्व :

यह अध्ययन शिक्षक शिक्षा संस्थानों, शिक्षक-प्रशिक्षकों, शिक्षा नीति-निर्माताओं तथा शोधार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। इसके निष्कर्ष शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में कला-आधारित गतिविधियों के समावेश हेतु सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक आधार प्रदान करेंगे। साथ ही यह अध्ययन भावी शिक्षकों में सहानुभूति, संचार कौशल, आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता तथा मानसिक संतुलन विकसित करने की दिशा में भी मार्गदर्शन देगा।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता की अवधारणा :

भावनात्मक बुद्धिमत्ता वह क्षमता है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी एवं दूसरों की भावनाओं को समझता, नियंत्रित करता तथा उनका उचित उपयोग करता है। डेनियल गोलमैन (1995) ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता के पाँच प्रमुख आयाम बताए-

आत्म-जागरूकता (Self-awareness)

आत्म-नियंत्रण (Self-regulation)

आत्म-प्रेरणा (Motivation)

सहानुभूति (Empathy)

सामाजिक कौशल (Social Skills)

एक भावनात्मक रूप से बुद्धिमान शिक्षक विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझते हुए समावेशी एवं सकारात्मक शिक्षण वातावरण का निर्माण करता है।

शिक्षक शिक्षा में रंगमंच एवं ललित कला द्वारा भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विकास :

रंगमंच एवं ललित कला शिक्षक-प्रशिक्षुओं में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विभिन्न आयामों का विकास करती हैं-

आत्म-जागरूकता: अभिनय, चित्रांकन एवं संगीत जैसी गतिविधियाँ व्यक्ति को अपनी भावनाओं को पहचानने एवं व्यक्त करने का अवसर देती हैं।

आत्म-नियमन: कला-सृजन के दौरान अनुशासन, धैर्य एवं भावनात्मक नियंत्रण का अभ्यास होता है।

सहानुभूति का विकास: भूमिका-अभिनय के माध्यम से शिक्षक विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों का अनुभव करता है। इससे दूसरों की भावनाओं को समझने और उनका सम्मान करने की क्षमता विकसित होती है।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

तनाव प्रबंधन: संगीत, नृत्य एवं चित्रकला जैसी कला गतिविधियाँ मानसिक तनाव को कम करती हैं तथा भावनात्मक संतुलन बनाए रखने में सहायता करती हैं। एक तनावमुक्त शिक्षक अधिक प्रभावी ढंग से शिक्षण कर सकता है।

प्रभावी संप्रेषण कौशल: रंगमंच शिक्षक की भाषा, उच्चारण, हाव-भाव, प्रस्तुतीकरण तथा आत्मविश्वास को विकसित करता है। इससे कक्षा में शिक्षण अधिक प्रभावशाली बनता है।

नेतृत्व एवं सहयोग: समूह आधारित नाट्य एवं कला गतिविधियाँ टीमवर्क, नेतृत्व, सहयोग तथा समस्या समाधान की क्षमता विकसित करती हैं, जो एक सफल शिक्षक के आवश्यक गुण हैं।

शिक्षक शिक्षा में कला आधारित भावनात्मक बुद्धिमत्ता के अनुयोग :

नाट्य गतिविधियाँ: नाटक एवं भूमिका-अभिनय के माध्यम से शिक्षक प्रशिक्षु विभिन्न परिस्थितियों का अनुभव करते हैं, जिससे उनमें सहानुभूति एवं निर्णय क्षमता विकसित होती है।

संगीत चिकित्सा: संगीत तनाव कम करने, ध्यान केंद्रित करने तथा भावनात्मक संतुलन बनाए रखने में सहायक है।

चित्रकला एवं रचनात्मक लेखन: चित्रों एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से शिक्षक अपनी भावनाओं को व्यक्त करना सीखते हैं।

समूह कला गतिविधियाँ: समूह में कला कार्य करने से सहयोग, नेतृत्व, संवाद एवं सामाजिक संबंध मजबूत होते हैं।

लोककला एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम: भारतीय लोककलाओं के माध्यम से सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक संवेदनशीलता एवं राष्ट्रीय एकता का विकास होता है।

चुनौतियाँ :

कला गतिविधियों के लिए पर्याप्त संसाधनों का अभाव।
प्रशिक्षित कला शिक्षकों की कमी।
परीक्षा-केंद्रित शिक्षा व्यवस्था।
कला को सहायक विषय मानने की मानसिकता।
प्रशिक्षण संस्थानों में समय एवं बजट की कमी।

सुझाव :

शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में भावनात्मक बुद्धिमत्ता को अनिवार्य बनाया जाए।
कला आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का नियमित आयोजन किया जाए।
हर एक बी.एड. एवं डी.एल.एड. संस्थान में कला प्रयोगशाला स्थापित की जजाए शिक्षकों को कला-आधारित शिक्षण की आधुनिक तकनीकों का प्रशिक्षण दिया जाए।
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप कला एवं भावनात्मक अधिगम को पाठ्यक्रम में प्रभावी रूप से लागू किया जाए।

निष्कर्ष :

शिक्षक शिक्षा का उद्देश्य केवल कुशल अध्यापक तैयार करना नहीं, बल्कि ऐसे संवेदनशील, रचनात्मक एवं भावनात्मक रूप से सक्षम शिक्षक विकसित करना है जो विद्यार्थियों के समग्र विकास में योगदान दे सकें। रंगमंच एवं ललित कला भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विकास के प्रभावी साधन हैं। रंगमंच शिक्षक में आत्मविश्वास, सहानुभूति, संप्रेषण कौशल तथा नेतृत्व क्षमता विकसित करता है, जबकि ललित कला उसकी रचनात्मकता, संवेदनशीलता और सौंदर्यबोध को समृद्ध करती है। इन दोनों के समन्वित उपयोग से शिक्षक अधिक मानवीय, प्रभावी और छात्र-केंद्रित बनता है। अतः शिक्षक शिक्षा संस्थानों को कला-

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

आधारित शिक्षण एवं भावनात्मक अधिगम को अपनी प्रशिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाना चाहिए, जिससे गुणवत्तापूर्ण एवं मानवीय शिक्षा की स्थापना संभव हो सके। इससे न केवल शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता बढ़ेगी, बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता तथा विद्यार्थियों का समग्र विकास भी सुनिश्चित होगा।

संदर्भ :

गोलमैन, डेनियल (1995). Emotional Intelligence. Bantam Books.

भावनात्मकता को सुदृढ़ करती शिक्षा। शाश्वत पब्लिकेशन।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। (पत्रिका)

यूजीसी (UGC). Teacher Education Guidelines.

हाशिम, एन. एस. एवं रहमान, एम. के. (2026). रंगमंचीय गतिविधियों के माध्यम से शिक्षक-प्रशिक्षुओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विकास। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड इनोवेशन इन सोशल साइंस (IJRISS).

भारतीय शिक्षा एवं शिक्षक-शिक्षा से संबंधित विभिन्न शोध-पत्र एवं संदर्भ ग्रंथ।